मानव आत्म सम्मान से दूर क्यों !!!

मानव का यह जन्म ईश्वरीय देन है। सबके साथ प्रेम, मैत्री और नि:स्वार्थ भाव से रहना यह ईश्वर का फरमान है, लेकिन मानव अपनी स्वार्थ वृत्ति व संकुचित विचारों के कारण वह सिर्फ थोड़े से लोगों से घनिष्ठ सम्बन्ध बनाकर रहता है। इसके लिए स्वयं को जानना, पहचानना, समझना तथा आत्ममंथन करना आवश्यक है। मकान की नींव मज़बूत करने के लिए ईंट, पत्थर, सीमेंट और लौह खण्ड की चिंता करने वाले हम क्या जीवन की नींव को मज़बूत करने के लिए चिंतित रहते हैं। स्वयं से न जुड़े रहना ही अनेक दु:खों का कारण है। हमें यह समझना चाहिए कि जीवन सिर्फ मानने के लिए नहीं है बल्कि स्वयं को जानने के लिए भी है। ऐसी समझ से जीवन की नींव को मज़बूत करने के लिए अपने व्यस्त जीवन में से स्वयं के लिए थोड़ा समय निकालना आवश्यक है।

- ब्र. कु. गंगाधर

जीवन की मज़बूत नींव बनाने का पहला आधार है खुद को जानना। अपनी पहचान, दिये गये बोयोडाटा या विज़िटिंग कार्ड में दिये गये विभिन्न मर्तबे तक ही सीमित नहीं है। ये वर्णन तो दूसरों को देने के लिए है। स्वयं को पहचानने का बायोडाटा तैयार करने के लिए पूरी ज़िंदगी बीत जाती है। फिर भी अंत घड़ी तक मानव स्वयं को पहचान नहीं पाता। ज़िंदगी के हिसाब में स्वयं को जानने-पहचानने की अग्रिमता सबसे महत्वपूर्ण है।

अपना कैसा बायोडाटा तैयार करना है यह कभी सोचा है? या मेरा अभी का बायोडाटा कैसा है ये देखा है? मेरा स्वभाव कैसा है? मेरे स्वभाव की मर्यादायें, निर्णय लेने में मैं क्यों पीछे हो जाता हूँ? मेरी चाल-चलन कभी कोई-कोई प्रसंग में नॉर्मल क्यों नहीं रहती। स्वयं पर मेरा नियंत्रण क्यों नहीं रहता? मेरी जीवन प्रणाली किस ढंग की है, मैं कौन से संयोग में मूल्यनिष्ठ रह सकता हूँ, कौन से संयोग में मूल्य को दरकिनार कर देता हूँ, बाहर के लोगों के साथ अच्छा व्यवहार और घर के परिवार के साथ तुच्छ क्यों बना रहता हूँ? मैं मेरा मन, मेरा शरीर, मेरी आत्मा और मेरे स्वास्थ्य का सम्मान बनाये रख सकता हूँ? आज मानव मात्र में जेब का वज़न बढ़ाने में रुचि है और शरीर का वज़न घटाने में रुचि है, लेकिन उतनी ही रुचि उनके कम होते आत्म-प्रतिष्ठा की नहीं रहती।

स्वयं के सम्मान के प्रति श्रेष्ठ अभिगम बनाये रखना, यही शूरवीरता है। शरीर को सुंदर बनाने के लिए बाज़ार से साधन-सामग्री मिल सकती है, लेकिन मन को सुंदर बनाने के लिए साधनों का निर्माण अंदर की वर्कशॉप में ही करना होता है। साथ ही अपनी मान्यताएं तथा विचारों को भी सदा श्रेष्ठ एवं मूल्यवान बनाना चाहिए। आज मानव जगत के साथ जुड़ने वाले होशियार भी स्वयं के प्रति जुड़ने में बहुत कायर होते हैं। यह कायरता उन्हें रिंचक मात्र भी ज़िंदगी भर परेशान नहीं करती।

स्वार्थ प्रेरित कार्यो में ज़्यादा और त्याग भावना में कम, ये सांसारिक जीवन का 'संसार दर्शन' है। संसार में बहुत ही कम पवित्र आत्माओं को छोड़कर मनुष्य अज्ञात मोक्ष की चिंता करता है। लेकिन स्वयं को 'मुक्त' रखने की चिंता रिंचक मात्र भी नहीं करता। प्रत्येक पल मुक्ति का एहसास, यह पार्थिव जीवन में मिला हुआ दुर्लभ मोक्ष है। प्रतिकूल परिस्थिति, विभिन्न समस्याओं में, कठिनाइयों में, बिगड़े रिश्तों में तथा स्वयं की संकीर्णता की कारागार से मुक्त रख मन की प्रसन्नता व आनंदानुभूति बनी रहे यह बहुत बड़ी उपलब्धि व सिद्धि है। हमने इस धरा पर रहकर क्या पाया, उससे ज़्यादा नष्ट कर दिया उसका हिसाब करना चाहिए।

जो स्वयं को पहचानता है वो खुद की आसक्ति का गुलाम नहीं होता। वह जानता है कि आसक्ति ही असंतोष का सृजन करती है।

ज़िंदगी का सबसे बड़ा शत्रु है रोज़मरा की ज़िंदगी के चक्रव्यूह में फँसे रहना। मानव स्वयं ही मशीन बनने की कोशिश करता है तो जीवन में यांत्रिकता के सिवाए और क्या रह जाता? जो स्वयं को पहचानता है वह नया उमंग-उत्साह

- शेष पेज 8 पर

मन शांत है तो बुद्धि शुद्ध है

जो सिस्टम यज्ञ से बनती है उसे सारे विश्व में फॉलो करना सहज हो जाता है। भले कोई भी देश में रहते हैं पर बुद्धियोग में बाबा, मुरली, मधुबन। बाबा के जो भी ब्राह्मण बच्चे हैं उनको भविष्य के लिये अच्छी कमाई करने का अभी भाग्य है। सभा में बैठे हुए इतने सब भाई बहनें शान्ति में बैठे हैं, यह शान्ति भी स्नेह भरी है। रूखी सूखी शान्ति नहीं है। स्नेह भरी शान्ति वायुमण्डल को शक्तिशाली बना देती है। बाबा कहता है बच्चे, हम कहते जी बाबा। बाबा हमारे से क्या चाहता है। विश्व की राजाई लेनी है, विश्व पर राज्य करने का भविष्य प्लान हमारे बाबा के पास ऐसा है, जो हम समझते हैं, हम ऊपर जाके बैठ नहीं जायेंगे। जल्दी नीचे आ जायेंगे। हम सबके दिल में क्या है? बाबा आया है हमको ले जाने लिये। कहाँ जायेंगे? 5 तत्वों से पार। हमारा घर कहाँ है? मूलवतन में बैठ जायेंगे क्या! देखो बाबा अव्यक्त हो करके भी अपनी शान्ति की शक्ति अव्यक्त रूप में हम आत्माओं को कैसे दे रहा है। हमारी भी दिल है कि बाबा जो हमारे से चाहता है, जो उसकी दिल में है, वह बाबा की दिल हम सब पूरी करें। हम सबके दिल में है एक दिलाराम। सब आत्मायें भाई भाई हैं। हम कहेंगे यह भाई की आत्मा है, यह बहन की आत्मा है। आत्मायें परमात्मा की सन्तान होने से निश्चय और नशा है हम कौन हैं और किसके हैं? सच बताओ कि यह नशा चढ़ा हुआ है? रात को सोते, सुबह को जागते भी यह घड़ी-घड़ी स्मृति आती है - मैं कौन हूँ, किसकी हूँ!

मैं कौन? तो लाइट हो जाते हैं, हल्के हो जाते हैं। मेरा कौन? तो शक्ति आ जाती है जैसे कि वर्से में बाबा ने कहा मुक्ति और जीवनमुक्ति। कोई भी पुरानी वा पराई बातों से मुक्ति, फिर जीवन सेवा में है, ऑटोमेटिक दिल कहे बाबा तेरा शुक्रिया। जो हम बाबा के, बाबा हमारा, सारे कल्प में यह नशा नहीं होगा। भले सारे कल्प में हम लोगों ने 84 का चक्र लगाया है, ब्रह्माकुमार तो अब बने हैं, पर सारे कल्प में जो हमारा पार्ट है, वन्डरफुल है। मन शान्त है तो बुद्धि शुद्ध है। शुद्ध शब्द को और कुछ अच्छा शब्द देना चाहिए। बहुत शुद्धि है।

यह डायमण्ड हॉल क्यों बना है! जब यहाँ याद का प्रोग्राम है तो बाहर में इधर उधर घूमने में, बातें करने में टाइम देना, यह बी.के. का काम नहीं है, क्योंकि ब्रह्माकुमारियाँ या ब्रह्माकुमारों को सारा विश्व जानता है। बाबा के पास कोई कोई आत्मायें बड़ी वन्डरफुल हैं। उनके सामने सब शक्तियाँ हाज़िर रहती हैं। सहनशक्ति, समाने की शक्ति, समेटने की शक्ति... यानी कोई बात हो तो उसकी डिटेल में नहीं जाना है। तो समेटने की शक्ति से कहेंगे सब अच्छा है। अच्छा-अच्छा कहके समेट लेंगे।

यहाँ पर जो शान्ति का वायुमण्डल है, शान्ति के साथ जो सच्चाई और प्रेम है, वह बड़ा सुखदाई है। दु:ख का नाम-निशान भी खत्म। ऐसे कौन-से भाई बहनें बैठे हैं जिन्होंने दु:ख का नाम-निशान खत्म किया है? दु:ख कभी नहीं होवे, क्योंकि यह समय है बाबा के नयनों में बैठने का माना अष्ट रत्नों में आने का। इसके लिए बड़ा सहज पुरुषार्थ है। बाबा का बनने से सभी का रंग अच्छा हो गया है। पवित्रता, मधुरता, सत्यता, धैर्यता, नम्रता की विशेषतायें अगर हमारे जीवन में आ गयी तो जीवनमुक्त हैं। पुरानी बातों से मुक्ति ही जीवनमुक्ति है। भले सतयुग में होंगे परन्तु वहाँ ऐसे थोड़ेही बाबा बाबा करेंगे। यह टाइम संगम का दिल कहे बाबा तेरा शुक्रिया, मुख पीछे बोलता है पर दिल से निकलता है शुक्रिया बाबा आपका, जो आपने सच्ची शान्ति, प्रेम, सच्चाई जैसे वर्से में दे दी है, इससे ही अन्त मते सो गति होगी इसलिए मुझे खुशी है अन्त मते अच्छी होगी। ऐसी अन्त मते सो गति की तैयारी अभी पहले से ही करनी है। ना कोई अपना, ना कोई अपनी, हम हैं योगी लोग। ठीक है! कौन है मेरा! वह एक ऐसा है जो सबका है वो मेरा है, वन्डरफुल है मेरा बाबा। हमको अपना बनाके मुस्करान सिखा दिया। यह मेरा बाबा वन्डरफुल है। डिटैच बनने के लिये अटैचमेंट एक के साथ है। कोई अपना नहीं, कोई अपनी नहीं। डिटैच और लविंग नेचर प्रैक्टिकल लाइफ में बाबा ने हम सबको ऐसा सिखाया जो आज दिन तक काम आ रही है।

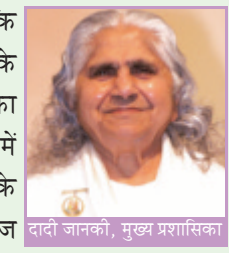

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

हमें सूक्ष्म रूप से सोचना, बोलना और देखना है

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

न मन वेस्ट जाए, न वाणी, न कर्म । मंज़िल भारी है तो पावरफुल इंजन बाबा ही चाहिए । हम मंदिर की मूर्ति, जितना समय मंदिर की सजावट पर देते, क्या उतना भी समय मूर्ति को स्वच्छ और सुन्दर बनाने में देते हैं? मुझे मंदिर बनना है या मूर्ति बनना है।

हम टीचर्स का पुरुषार्थ अब सूक्ष्म होना चाहिए। सूक्ष्म रूप से सोचना, बोलना और देखना एक ज़बरदस्त अनुभव है। पुरानी दुनिया से हमारा लंगर उठा हुआ हो।

अभी अशरीरी बनना है, उसके बगैर काम नहीं चलेगा। इसके लिए डबल बटन दबाना है और वो भी फुल पावर पर हो। योग की आदत हो। मन कमज़ोर न हो, उसका इलाज योग ही है। योग बल और मेडिकल बल दोनों ही चलाते हैं, लेकिन अध्यात्म नियम से करने से असर होता है। अपने ऊपर कंट्रोल चाहिए। ज्ञान योग में कमी पड़ जाती है। योग को साथ मिलाते हैं तो उसमें जान आता है। सवेरे ठीक टाइम पर उठें तो बस सब ठीक है। जब तक ज़िंदा हैं, ब्रह्मा कुमारी हैं, तब तक सब कुछ कर सकते हैं। कोई कहाँ भी हो, पुरुषार्थ की लगन लगी हुई हो। बाबा से प्यार है माना सभी से है। जो पढ़ाई में ठीक है वो अन्य बातों में भी ठीक होंगे । पढ़ाई पढ़ने का शौक होना चाहिए। तरीके से पढ़ना है। धक्के से पास नहीं होना। तंग नहीं होना, नहीं तो आदि पढ़ाई बुद्धि में और आधी व्यर्थ चली जायेगी। इस लाइफ से तंग नहीं होना। जो भी करो निश्चय से करो। कुछ भी करो लेकिन टाइम पर करो। नहीं तो लास्ट में पछतायेंगे। जो नंबर अच्छा लिया तो कहेंगे पढ़ा है। अगर ज़्यादा खर्च किया, इधर उधर घूमे तो पढ़ाई कहाँ हुई। अपने आपको टाइम कम तो नहीं देते? पेपर के टाइम पता पड़ेगा। सच्ची सच्ची पढ़ाई है या ऐसे ही है, ये थोड़े समय में पता पड़ेगा। अगर सच्चे हैं तो साहेब राज़ी है।

तो अभी सभी के दिल में कौन? मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा और यही दिल में बिठाने से जो बाबा हमसे चाहता है, बच्चे मेरे जैसे बन जायें, ऐसे ही सभी बाबा के समान, बाबा ने जो कहा हमने किया। एक-एक शब्द बाबा का अपने जीवन में समा करके हम भी बाबा के समान बनेंगे ज़रूर। बन भी रहे हैं और बनेंगे भी, क्योंकि बाबा से प्यार है ना। तो जिससे प्यार होता है उसको भूलना मुश्किल होता है, याद करना मुश्किल नहीं होता। तो बाबा को हम दिल से प्यार करते हैं, बाबा से हम सबका दिल का 100 परसेंट प्यार है। जिससे कुछ मिले उससे ही तो प्यार होता है। तो बाबा ने हमें क्या क्या दे दिया, हमें ये मालूम ही नहीं था कि इतना हमको मिलेगा, लेकिन बाबा ने इतना दिया है जो हम सभी मालामाल हो गये हैं। तो बाबा के प्यार ने हम सबको भी सबका प्यारा बना दिया। सबके प्यारे हो गये हैं ना! किसी से वैर विरोध नहीं है। बाबा का साथ बहुत प्यारा है। एक बाबा शब्द में भी बहुत प्यार है। बाबा ने हम सबको इतना प्यार दिया है, इतनी मेहनत की है एक एक बच्चे के ऊपर जो बच्चा कभी भूल नहीं सकता। बाब ने जो प्यार दिया है हमको, इतना अच्छा बनाया है वो कभी भूल सकता है? नहीं भूल सकता है, यही प्यार हमको दो युग बहुत आनंद और प्रेम दिलायेगा। लेकिन उसके पहले अभी जो बाबा चाहता है वो करना है, बस। जो बाबा ने मुरली में कहा वो करने से बाबा जो चाहता है वो चाहना पूरी होती है, और हम भी बहुत खुश होते हैं। जब रात्रि को देखते हैं, जो बाबा ने कहा वही हमने सारा दिन किया तो अपने ऊपर भी बहुत खुशी होती है। अगर नहीं करते हैं तो शक्ल थोड़ी बदलती है। बाबा जो मुरली चलाते हैं, वो मुरली हमारे लिए बहुत अच्छा साधन है, बाबा ने कहा और हमने सारा दिन किया। हर मुरली में चारो ही सब्जेक्ट होते हैं, उन चारो सब्जेक्ट्स को ध्यान में रख करके हम उसी प्रमाण अपने आपको चलायें तो बहुत इज़ी है, मेहनत नहीं है।